परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : +91 8434170118

तक्षशिला

अंक – तेरह अगस्त 2018 – नवंबर 2018

बाल संवाद

प्यारे दोस्तो,

मैं हूँ चहकने की ललक। इस अंक 13 में मेरे बाल लेखकों ने मेरे लिए मेरे बारे में बहुत अच्छा लिखा है। इससे पता चलता है कि मुझसे मिलने के बाद इन बाल लेखकों में काफी कुछ बदलाव हुआ है। इस बार तो मेरे प्यारे लेखकों ने मुझे खुद से तैयार किये हैं, सर्व प्रथम 2014 में मुझे प्रकाशित किया गया, जिसमें मेरे बाल लेखकों ने अपनी रचना को प्रदर्शित किये। उस दरमिया उन्हें बेहद खुशी हुई और लगातार मेरे लिए अपनी रचना को लिखते रहे। मैं आशा करता हूँ कि आगे भी ऐसा ही अच्छा लिखेंगे। यह परिवर्तन बाल अखबार सभी बच्चों का अखबार है। जिसमें बच्चे अपनी-अपनी कला को दिखाने की कोशिश करते हैं।

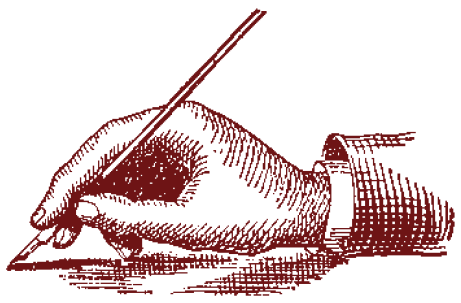

आपका साथी मैं
(चहकने की ललक)

सावन का झुला

अपनी बात

हमारे दरवाजे पर एक सिसम का पेड़ हैं, उसपर हमारे पापा ने एक झुला बनाये हैं, उसपर हम और हमारी बहन झुला झुलते हैं। और हमारी दोस्त भी कभी–कभी झुला झुलने आती है। और हम सब मिलकर खुब झुला झुलते हैं। बहुत मजा आता है।

मोबिना खातुन, कक्षा–5,
मियाँ के भटकन

ईद की सेवईया

निबंध

पहले चाँद उगता है। तब रमजान शुरू होता है।
फिर सुबह उठकर खाना बनाते है। सेहरी खाते है। शाम 5 बजे रोजा खोलते है। 30 रोजा होने पर ईद आती है। नये–नये कपड़े पहनते है। फिर ईदगाह में जाकर नमाज पढ़ते है, फिर घर आकर सेवईया अम्मी बनाती है। उसमें बहुत सारा चीज डालती है। उसमें काजू, किशमिश, गड़ी, छोहाड़ा डालती है। हम गुबारा भी उड़ाते है।

साहिल अंसारी, बंथू सलोना

करने को कुछ

पहले मैं स्कूल नहीं जाता था। मुझे स्कूल जाने में बहुत डर लगता था। मेरे दोस्त लोग बोलते थे कि चलो स्कूल तो मैं डरता था। मुझे लगता था कि स्कूल में जायेंगे और सर कुछ पुछेंगे, नहीं बतायेंगे तो मारेंगे। इस वजह से स्कूल नहीं जाता था, एक दिन की बात है, मेरे स्कूल में परिवर्तन से मैम आई थी और उस दिन भी मैं स्कूल में नहीं गया था। मेरे दोस्त बता रहे थे कि वह क्राफ्ट से बहुत कुछ बताई पेपर के माध्यम से अलग–अलग चीज सिखाई थी। मेरे दोस्त पेपर से बनाए हुए समान को दिखाये। जब मैं देखा तो मुझे भी स्कूल जाने का मन कर दिया और अगले दिन स्कूल गया, तो मैं अपने दोस्तों से पुछा आज वह मैम नहीं आयेगी क्या तो उन्होंने कहा नहीं वह कभी–कभी आती है, तो मैंने अपने दोस्तों के माध्यम से पेपर से जो चीज मैम सिखाकर गई थी वह चीज मेरे दोस्ते मुझे सिखाये, और उसके बाद मैं पेपर से अलग–अलग चीज बनाना सीख गया, और मैं अपने दोस्तों के साथ परिवर्तन क्लास करने के लिए आने लगा और अपने छोटे भाई बहन को सिखाने लगा।

प्रतीक राज, कक्षा-पांचवी, धर्मपुर

सावन के झूले

कविता

देखो–देखो सावन आया।
बच्चों का बहार है लाया।
पेड़ों के लतो पर चढ़कर।
बच्चे खूब मौज उड़ाते।

इधर टर–टर उधर टर–टर
मेढ़को ने जगन मनावे।
हरे–हरे झूलो पर झूलकर
बच्चे मौज खूब उड़ाये।
हम झूलेंगे हम झूलेंगे।
यहीं सब चिल्लाये।

कुछ खास होता है, इस मौसम में,
जो किसी में न आये।
दिन भर झूला, दिन भर झूला
पढ़ाई में तो मन जाये।
यही मौज है सावन में
देखो–देखो सावन आया।

रिशु सिंह,
बाल पथिक,
गाँव-बड़हुलिया
कक्षा 10

कविता

खेत की हरियाली

खेतों में हरियाली आयी
जंगल में खुशहाली छायी।
खेतों के पशु पक्षियों ने
मन में खुशियां खुब मनाई
तरुवर झुमे नाचे पौधे
नये–नये शोभा है आयी
खेतों में हरियाली आयी
पीले–पीले होते हैं सरसो
सबके मन को भाते हैं।
हरी–हरी डालियों पर
पक्षी नाच दिखाते हैं।
बादल मन को भाते हैं।
खेतों में हरियाली आयी...।

पल्लवी सिंह, बाल पथिक
कक्षा-दसवीं, बड़हुलिया

शिक्षकों की कलम से

कहानी

यह कहानी एक छोटी बच्ची की है, एक समय की बात है जब लड़कियों को स्कूल नहीं जाने दिया जाता था, उस समय सिर्फ लड़कों को ही स्कूल भेजा जाता था, लोग यह सोचकर लड़कों को पढ़ने भेजते थे कि वह बड़ा होकर अच्छा पढ़ लिखकर नौकरी करेगा, और लड़कियों को इसलिए नहीं पढ़ाया जाता था कि लड़की पढ़ लिखकर घर का चौका बर्तन करेगी। लेकिन लड़की भी पढ़ना चाहती है, वह चाहती है, घर का सारा कार्य करने के बाद पढ़े। मेरे गाँव में एक छोटी लड़की थी, जिसका नाम जिज्ञासा था, वह पढ़ना चाहती थी लेकिन उसके घर वाले उसे पढ़ाना नहीं चाहते थे। जब उसका भाई पढ़कर आता था तो वह भी उसके साथ पढ़ने बैठती थी और जो कुछ उसका भाई याद करता था, वह लड़की सुनकर ही याद कर लेती थी, धीरे–धीरे वह किताब भी पढ़ने लगी थी और दिन–प्रतिदिन पढ़ाई के प्रति उसका रूची बढ़ता गया और जब उसके घर वाले उसे पढ़ते हुए देखे तो उन्हें लगा की यह भी पढ़ सकती है और अपने भविष्य में आगे बढ़ सकती है। इसलिए उसके घर वाले उसका दाखिला स्कूल में करा दिए। आज वह लड़की पढ़ लिखकर बिहार पुलिश की नौकरी कर रही है और बहुत खुश है।

नाम-श्वेता सिंह, किसलय फेसिलिटेटर

ईद की सेवईया

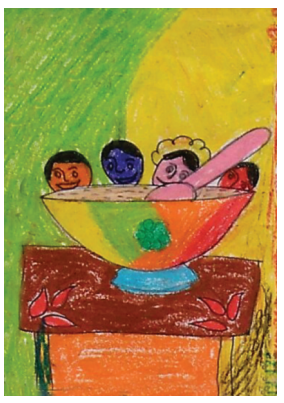

ईद मुस्लिम लोगो का बहुत ही अच्छा त्योहार है। मै तो हिन्दू हूँ पर मेरी एक दोस्त है, जिसका नाम है आशिया खातुन हम दोनो एक साथ ही पढ़ाई करते हैं मेरी दोस्त में एक खासियत है, कि वह ज्यादा हंसाती भी है। मेरे सर कभी कभी गुस्सा हो जाते हैं, बोलते हैं कम बोलो और ज्यादा सुनो। मेरी दोस्त आसिया बहुत अच्छी है, मुझे ईद त्योहार के बारे मे बताती है यह त्योहार कैसे किया जाता है, और ईद के दिन क्या क्या बनता है, वो सब कुछ मुझसे बताती है और ईद के दिन मुझे अपने घर बुलाई थी हम दोनो ने मिलकर मीठी मीठी सेवईया खाई और बहुत मस्ती भी किये, शाम होते ही मै अपने घर आ गयी।

ज्योति कुमारी, कक्षा 8, सीकियाँ

खेत की हरियाली

मैं पापा के साथ एक दिन खेत में गई। पहले पापा मना कर दिये, लेकिन फिर मान गए। जब मै अपने पापा के साथ खेत मे गई मुझे वहाँ इतना अच्छा लगा, खेतों की हरियाली ठंडी, ठंडी वो हवा और कोयल की मधुर और प्यारी–सी गीत मुझे इतना अच्छा लगा की मैं एक सुन्दर सपना मे खो गई। सोचने लगी की काश मुझे ऐसा कोई जगह मिलता जहाँ मैं कुछ करने के लिए जाती, वहाँ अमीर गरीब सबके बच्चे जाते

अपनी बात

और कोई भी भेद भाव नही होते। कुछ दिन बाद ठीक ऐसा ही जगह मिला, जिसका नाम परिवर्तन है। यहाँ अमीर, गरीब, छोटे बड़े हिन्दु–मुस्लिम सभी आते हैं यहाँ भी आस–पास बहुत हरियाली है, बहुत अच्छा जगह है, यह परिवर्तन मुझे इतना अच्छा लगा कि मै रोज यहाँ आने लगी, और मुझे यहाँ बहुत कुछ सीखने को मिला।

आसिया खातुन, कक्षा–8, मियां के भटकन

चुटकुला

एक बार एक लड़के को टाइम पता करना था। वह सामने के लड़की होस्टल के शिशे पर पत्थर फेका फिर लड़कियो ने कहा शालो अब शो जाओ रात के दो बज चुके हैं।

लालू, मोदी और केजरीवाल चोरी के जुर्म में पकड़े गए। आदालत में उनसे आखिरी ख्वाइस पूछी गई। लालू बोला मेरे आगे दो पीछे दो तकिया बाँध के 100 ड़ंडा मारा जाए। लगभग 40 डंडे में तकिया फट गया और बाकी डंडे उसे खाने पड़े। केजरीवाल कि बारी आई तो वो बोला आगे 4 पीछे 4 तकिया बाँधकर मारा जाए। लगभग 80 डंडे में तकिया फट गया और बाकी डंडे उसे खाने पडे। मोदी की बारी आई वह बोला मेरे आगे लालू और पीछे केजरीवाल को बांधकर 100 क्या हजार डंडे मार लो।

शुभम सिंह, गाँव–बड़हुलिया, कक्षा–7

कहानी

एक दिन की बात है, दोपहर का समय था। और मेरे गाँव के सभी लोग अपने अपने घरो में सो रहे थे। और मुझे नींद नही आ रही थी। मैंने सोचा कुछ पढ़ाई कर लेता हूँ, तब तक मेरे दोस्त भी आ गये बोले चलो बगीचे में वही पर हमलोग खेलेंगे। मै चला गया, हमारे घर से कुछ ही दुर पर बगीचा था, जेठ की दोपहरी में लू भी काफी तेज था। धुप के कारण पुरे शरीर से काफी पसीना बह रहा था। मैंने देखा एक बुढ़ी दादी बगीचा में बैठकर किसी को बुला रही थी। लेकिन उनकी आवाज किसी ने नहीं सुना, मैं उनके पास गया और जाकर बोला किसको बुला रही है, उन्होनें कहा बेटा मुझे बहुत तेज प्यास लगी है, पानी पिला दो। मैं अपने दोस्तों

से बोला हमलोग बाद में खेलेंगे पहले दादी को पानी पिला दिया जाये। मैं तुरत गया और बोतल में पानी भर कर लाया और उन्हे पिला दिया। उसके बाद हमलोग खेलने लगे।

बेलाल अंसारी, कक्षा 5, धर्मपुर

चुटकुला

एक बाजार में बाप–बेटे साथ में जाते हैं और बाजार मे से केला खरीदकर लाते हैं और एक केला नीचे गिर जाता है तो बेटा उठाने जाता है। पापा बेटे से कहते हैं बेटा नीचे गिरी हुई चीज को नहीं उठाना चाहिए तो बेटा नहीं उठाया और घर जाकर उसने पूरा केला खाकर नीचे छिलका गिरा दिया और बेटे की मां केले के छिलकों पर फिसल जाती है। बेटा कुर्सी पर बैठकर देख रहा है, मां बहुत बार आवाज देती है, बेटा उठाओ बेटा एक नहीं सुना। उसके पापा बोले मां गिर गई है तो उसे उठाना चाहिए। पापा आपने ही कहा था नीचे गिरे हुए सामान को नहीं उठाना चाहिए।

खुश्बू कुमारी, घर बेथु, कक्षा–6

आने वाला थीम

1. बचपन की यादे
2. नानी की कहानी
3. मेले की तैयारी
4. दाल रोटी
5. गाँव की कठिनाई
6. कदम्ब का पेड़

लेख

मछली पकड़ना

जब बारिश होती है, उस समय सभी नदी, पोखर, तालाब में पानी रहता है। उस समय पानी में रहने वाले सभी जीव जंतु बहुत ज्यादा हो जाते हैं, जैसे–सांप, जोंक, दोहना, मछली इत्यादि चीजें पानी में सबसे ज्यादा मछली ही नजर आती है, बड़ी मछली, छोटी मछली, सिघरी मछली, रेवा मछली, रोहु मछली, गडई मछली, टेंगड़ा मछली इत्यादि। गाँव–गाँव में लोग तालाब पोखर से मछली निकालते है और बेचते हैं।

लड्डु अंसारी, कक्षा–पांचवी, धर्मपुर

कहानी

दादी की सतू

एक प्यारी सी सुन्दर सी कॉपती हुई दादी मां हमारे बाजार में दुकान खोले बैठी रहती है। उनके पास बड़ा सा घड़ा, जिसमें ठंडा–ठंडा पानी रहता है। गर्मी के मौसम में वह सतू भी रखती है। सुबह–सुबह वह अपनी सतू का दुकान खोलकर बैठी रहती है। वह बहुत ही अच्छा सतू देती है। उसमें निंबू और नमक भी डालती है। जब वह सतू घोलती है, तब उनका हाथ कांपता है, उनके दुकान पर बहुत भीड़ होता है। वह सतू बेचकर ही पैसा कमाती है और अपने बेटों को देती है। मेरी प्यारी सत्तूवाली दादी माँ।

मोसर्रत जहां, मियां के भटकन, कक्षा 6

खुले से प्रश्न

कौन सी चीज है, जो खरीदने पर काली, इस्तेमाल करने पर लाल और फेंकने पर सफेद रंग की होती है?

वह क्या है, जिसे जिन्दा रहने पर गाड़ा जाता है और मर जाने पर खोदकर निकाल दिया जाता है?

रितु कुमारी, कक्षा–5, खेम भटकन

हमारे बाल चित्रकार

हमार बोली

जेठ की दोपहरी

जेठ महीना के घाम बहुत तेज होला, जब ज्यादा घाम लगेला तब, हम पढे ना जानी, हमार माई कहेली की घाम लागी त तबियत खराब हो जाई बाकी हमार दोस्त लोग जाला त हमरो जाय के मन करेला, त हमरा माई हमरा के छाता देली कहेली छाता ओढ़ के पढ़े जईह ना त तबियत खराब हो जाई, जब स्कूल से छुट्टी हो जाला तब बगईचा में रूक के आराम करके तब आवेनी हमार स्कूल बहुत दुर बा।

माया कुमारी, कक्षा–छठी, बंधुश्रीराम

पहेली

- ऐसी कौन–सी चीज है जिसे हम काटते हैं पर उसके टुकड़े नहीं कर सकते?
- ऐसी कौन सी चीज है, जिससे हम पढ़ते भी है और पहनते भी है?
- रोहन का आज बर्थडे है और उसके पापा ने उसको एक गिफ्ट दिया और कहा बेटा अगर तुम्हें भूख लगे तो इसे खा लेना और प्यास लगे तो पी लेना और अगर ठंड लगे तो इसे जला लेना। तो बताइए वह कौन सा चीज है जिसे रोहन के पापा ने उसे गिफ्ट दिया?
- एक पीपल का पेड़ है, जिसके नीचे पाँच लोग बैठे है गुँगा, लंगड़ा, अँधा, बहरा, लूल्हा। उस पिपल के पेड़ से एक आम गिरा तो बताइए वह आम सबसे पहले कौन उठाएगा?
- अंगुठी और चाभी को मिलाकर कौन सा नाम होता है?

नाम रिया सिंह, कक्षा–7, बड़हुलिया

तक्षशिला पब्लिकेशन द्वारा परिवर्तन के लिए प्रकाशित। सज्जा एवं मुद्रणः इमेजिका ग्राफिक्स